International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2016; Page No. 424-425

औपनिवेशिक भारत में रेलवे

Tulsi Chouhan
Assistant Professor, Department of History, Vivekananda College, Delhi University, Delhi, India

प्रस्तावना

वर्तमान समय में रेलवे परिवहन का सबसे सशक्त साधन है। और किसी भी देश के आर्थिक विकास के लिए रेलवे अति महत्वपूर्ण है। रेलवे के विकास के साथ-साथ औद्योगिक विकास प्रत्यक्ष तौर से जुड़ा है। इस कथन से कोई भी इनकार नहीं कर सकता है। परंतु औपनिवेशिक भारत में रेलवे के विकास का उद्योगों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा और इसे विऔद्योगिकरण की संज्ञा दी गई। यह प्रश्न बहुत ही रोचक है कि ऐसा क्यों हुआ। इसक लिए हमें पहले औपनिवेशिक सरकार की रेलवे को लेकर क्या सोच थी, का विश्लेषण करना होगा। यह सर्वमान्य सत्य है कि औपनिवेशिक सरकार भारतीयों के कल्याण या किसी कल्याणकारी राज्य के निर्माण के लिए नहीं अपितु अपने संकीर्ण हितों को पूरा करना ही उनका एक मात्र धर्म था। उन्होंने जिस भी क्षेत्र में किसी भी नीति का आवलंब किया उसका मात्र यही उद्देश्य था-स्वहित की प्राप्ति। और इस बात में कोई आश्चर्य नहीं है कि रेलवे भी इसका अपवाद नहीं था।

ब्रिटेन में औद्योगिक क्राति के पश्चात कपड़ा उद्योग का पर्याप्त विकास हुआ नए-नए मशीनरी आविष्कारों से कपास से कपड़े का निर्माण कम समय में हो रहा था और इन उद्योगों के लिए कपास ब्रिटेन में पहुंचाने के लिए रेलवे एक अचूक बाण की तरह काम करेगा। साथ ही साथ ब्रिटेन में निर्मित कपड़े को भी भारत के दूर-दराज के बाजारों में बेचा जा सकता था। इस मंतव्य को ध्यान में रखकर अंग्रेजो को रेलवे लाइन को भारत में बिछाने का विचार काफी आकर्षक लगा। इसके अलावा जूट, नील, मसाले आदि, जिनकी ब्रिटेन के उद्योगों व बाजारों में अत्यधिक मांग थी, ने भी इस प्रक्रिया में योगदान दिया।

इसके अरिरिक्त भारतीय उपमहाद्वीप में होने वाले छोटे-बड़े विद्रोह के दौरान सेना को शीघ्र अतिशीघ्र एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाने की आवश्यकता ने भी रेलवे के विस्तार को प्रेरणा दी। इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि औद्योगिक क्रांति के पश्चात ब्रिटेन में एकत्रित पूंजी को कहीं न कहीं निवेश करना था और इसके लिए रेलवे को चुना गया।

उपरोक्त विवरण के आधार पर स्पष्ट है कि औपनिवेशिक सरकार ने रेलवे का निर्माण जिन उद्देश्यों को ध्यान में रखकर किया था उनमें कहीं भी भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास का तत्व किंचित मात्र भी नहीं था तो ऐसे में भारतीय अर्थव्यवस्था को भी उसके सकारात्मक परिणाम देखने को नहीं मिले।

रेलवे निर्माण का तमाम कच्चा माल भारत में होने के बावजूद भी रेल व डिब्बों का निर्माण भारत में नहीं किया गया। यदि रेलवे से जुड़े उपकरणों का निर्माण ब्रिटेन के स्थान पर भारत में किया गया होता तो लाखों लोगों को इससे सीधे रोजगार प्राप्त होता। 1869 में स्वेज नहर खुल जाने के बाद समुद्रीय परिवहन में बहुत बड़ा सुधार होने के कारण यह कार्य और भी सुगम हो गया।

भारतीय उपमहाद्वीप में जैसे-जैसे रेलवे का जाल फैलता गया वैसे-वैसे उन क्षेत्रों में भारतीय उद्योगों को कच्चा माल मिलना कठिन होता गया और धीरे-धीरे करके यह उद्योग दम तोड़ते नजर आए। इस प्रकार कभी न रुकने वाला एक चक्र आरंभ हो गया। जिसे विऔद्योगीकरण का नाम दिया गया।

इसके अतिरिक्त हम यदि रेलवे की प्रभाव की बात करें तो हम पाते हैं कि रेलवे ने भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न हिस्सों पर औपनिवेशिक हुकूमत की पकड़ को और मजबूत किया। एवं शासन की सुदृढ़ीकरण की प्रक्रिया को तीव्र किया। रेलवे ने ग्रामीण आत्मनिर्भरता को कुंठित कर दिया और कृषि के वाणिज्यकरण की प्रक्रिया को तीव्र कर दिया और इसी के साथ-साथ धन निर्गमन की प्रक्रिया को और बल मिला।

रेलवे के विस्तार को और विस्तृत दृष्टिकोण से देखने की आवश्यकता है और इस पर अभी और शोध करने की आवश्यकता है कि रेलवे से पर्यावरण पर क्या-क्या प्रभाव पड़ा और कितने वनों का नाश किया गया? जैव विविधता को कितना नुकसान पहुंचा या प्राण वायु की गुणवत्ता में कितनी गिरावट आई?

References

1. धर्मकुमार : कैंब्रिज इक्नॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया : खंड-II
2. Dutt RP. India Today.
3. Griffiths PJ. The British Impact on India.
4. Dada Bhai Naoroji. Poverty and British rule in India.